

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

17-अप्रैल-2017 14:45 IST

गुजरात, सूरत के किरण मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल के उद्घाटन पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

मंच पर विराजमान सभी साथी और विशाल संख्या में पधारे हुए मेरे सभी परिवारजन। मैं दुविधा में था कि गुजराती में बोलू कि हिंदी में बोलू, लेकिन बाद में मेरे मन में विचार आया कि आप सबने इतना बड़ा काम किया है इसका देश को भी तो पता चलना चाहिए। यहां पर सभी दाताश्रियों की बधाई की वर्षा हो रही है। पांच सौ करोड़, पांच सौ करोड़ बड़ी वाह-वाही चल रही है, लेकिन मैं वाह-वाही नहीं करूंगा। इन्होंने कुछ नहीं किया है। आपको झटका लगा न, यह अगर पांच सौ करोड़, पांच हजार करोड़ देते हैं कुछ नहीं है, मैं बता रहा हूं। इसलिए ये वो लोग हैं जो गुजरात के गांव में खेत में मिट्टी खा करके बड़े हुए हैं। ये वो लोग हैं जो कभी अपने साथियों के साथ आमली-पिपली के खेल खेलते थे। पेड़ पर चढ़ना-उतरना यही इनका जिम था। साइकिल के टायर को दौड़ाते हुए मजा लेना, यही बचपन था। बारहों महीना मां-बाप एक ही बात करते थे घर में इस बार बारिश अच्छी हो जाए, तो अच्छा होगा। बेटा पढ़ाई करेगा या नहीं करेगा यह चर्चा नहीं होती थी। चर्चा यही घर में होती थी कि भगवान करे इस बार बारिश अच्छी हो जाए। दूसरी प्रार्थना करते थे हमारे पास एक या दो जो पशु हैं वो कभी भूखा न रहे। ऐसे परिवार की संतान है यह वो संतान है जिन्होंने अपनी आंखों से यह सब देखा है, जिन्होंने बचपन में इस जिंदगी को जीया है।

बारिश कम भी हुई हो, परिवार को भी जितनी जरूरत है, उससे भी कम फसल हुई हो उसके बावजूद भी फसल का ढेर अगर खेत में तैयार पड़ा है, तो चोर खाए, मोर खाए, आया मेहमान खाए, जब बच जाए तो खेड़ खाए। यह संस्कार जिन परिवारों के हैं। खुद के पसीने से पैदा की हुई फसल चोर भी उठा कर ले जाए गुस्सा नहीं, पशु-पक्षी आ करके खा जाए तो भी संतोष। कोई अतिथि आ जाए, झोली है भर दे और फिर कुछ बचा-कुचा है तो बच्चों के लिए घर ले जाए और एक साल गुजारा कर दे, यह मेरे गुजरात के खेड़ परिवार के संस्कार है। यह उनके बच्चे हैं जिनके मां-बाप ने पेट काट करके भी किसी का पेट भरने में कभी कोई कमी महसूस नहीं करने दी। उनके लिए पांच सौ करोड़ कुछ नहीं होता। यह देने के संस्कार ले करके आए हैं। यह जब तक देंगे नहीं, रात को सौ पाएंगे नहीं। और मैं इन परिवारों के बीच में पला-बढ़ा हूं। मैं और जगह पर जाता हूं तो मुझे कभी-कभी feel होता है कि लोगों ने मेरे से नाता तोड़ दिया है। हर किसी की नजर में मैं प्रधानमंत्री बन गया हूं, लेकिन एक अगर कोई अपवाद है तो मेरा सूरत है। मैं जब भी मिला हूं वही प्यार, वही अपनापन। प्रधानमंत्री वाला कोई Tag कहीं नजर नहीं आता है। यह जो परिवार भाव मैं अनुभव करता हूं।

आपको हैरानी होगी, बाहर वालों को भी शायद हैरानी होगी। यह सब धनी परिवार हैं। अरबों-खरबों में खेलने वाले लोग हैं। जब से मेरा सूरत आना तय हुआ, तो जिन-जिन परिवारों से मेरा निकट नाता रहा है, अब तो अरबों-खरबों पति हो गए हैं। कभी उनकी मां के हाथ से बाजरे के रोटी खाई है। कभी खिचड़ी खाई है। मुझे फोन क्या आया कि आज रात को सर्किट हाऊस में आप रुकने वाले हैं, तो बाजरे की रोटी भेज दूं क्या? खिचड़ी भेज दूं क्या? आज सुबह भी मुझे जो नाश्ता आया एक परिवार ने पुराने मुझे वो अपने सौराष्ट्र में जो मोटी भाखरी बनाते हैं न, उनको याद था सुबह-सुबह भेज दी। उनको पता है, प्रधानमंत्री को क्या खाना है, क्या नहीं खाना है कोई मुश्किल काम नहीं है। लेकिन यह परिवार भाव है जिसकी हर परिवार की माँ ने, जिन्होंने कभी न कभी मेरी चिंता की है, वो उसी प्यार से मेरी चिंता में लगे हुए हैं। मैं समझता हूं जीवन का इससे बड़ा कोई सौभाग्य नहीं होता। पद से इंसान बड़ा नहीं होता है, यह प्यार ही है जो बड़प्पन को अपने सीने से सिमट कर रख देता है, जो आप लोगों ने मेरे साथ किया है मैं आपका आभारी हूं।

आज एक अस्पताल का लोकार्पण हो रहा है, आधुनिक अस्पताल है। जब मैं यहां था तो कहता था कि जिसका शिलान्यास मैं करूंगा, उसका उद्घाटन भी मैं करूंगा, तो लोगों को लगता था कि यह बड़ा अहंकारी है। यह अहंकार नहीं था। यह मेरे मन में एक commitment है कि यह शिलान्यास करके पत्थर गाढ़ करके तख्तियां लगाने की fashion समाप्त होनी

चाहिए, जो चीज शुरू करे वो चीज परिपूर्ण होनी चाहिए। अगर परिपूर्ण नहीं होने वाली है, तो शुरू नहीं करना चाहिए। यहां आप सबको जितनी खुशी होती है, मुझे उससे भी ज्यादा होती है, क्योंकि विजया दशमी का वो दिन था। भारतीय जनता पार्टी ने मुझे प्रधानमंत्री के नाते घोषित कर दिया था, उम्मीदवार के रूप में। मैं देशभर में दौड़ रहा था उस समय, लेकिन उसके बावजूद भी मेरे विजया दशमी और नवरात्रि के उपवास पूर्ण हुए थे। मैं तय किया कि नहीं, मैं सूरत तो जाऊंगा ही चाहे कितनी कठिनाई क्यों न हो, और मैं आया था। और उस दिन यह लाल जी बादशाह वो मेरी बगल में तस्वीर निकालना चाहते थे, तो भूमि पूजन के लिए फावड़ा चलाना था, तो मैंने बादशाह को कहा 50 करोड़ दोगे तो मैं करने दूंगा, नहीं तो नहीं करने दूंगा। इस अधिकार भाव से मैंने आप लोगों के बीच काम किया है और वो मान गए थे। इतने अधिकार भाव से मैंने आप लोगों के बीच काम किया। और तब यह अस्पताल, जब मैं अपने सामने इसका भव्य रूप देखता हूं, मेरे लिए इससे बड़ा कोई संतोष नहीं हो सकता है। और इस काम को इतने बढ़िया ढंग से परिपूर्ण करने के लिए पूरी टीम को मैं हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं।

मैं देख रहा था कि दाताश्री के धन से यह अस्पताल नहीं बना है। यह अस्पताल परिवार भाव से बहाया गया परिश्रम से बना है। पैसा से ज्यादा मूल्यवान परिश्रम होता है, पसीना होता है और यहां सब लोग हैं। वहां पर बैठे हुए जो सब लोग हैं, उन्होंने बस पैसे बहाए नहीं हैं, अपना पसीना बहाया है, पैसों पर पसीने का अभिषेक किया है। और इसलिए इस अस्पताल में जो भी आएगा, सामान्य रूप से मैं डायमंड की फैक्ट्री का उद्घाटन करता तो मैं कह देता कि आपकी फैक्ट्री फले-फूले, आपका कारोबार बढ़े, आप textile industries करते तो मैं शुभकामनाएं देता, लेकिन आज मैं श्राप देता हूं, शुभकामनाएं नहीं देता हूं। मैं चाहूंगा कि किसी को भी अस्पताल में आने की जरूरत न पड़े। और एक बार आना पड़ा तो दोबारा कभी आने की जरूरत न पड़े, ऐसा मजबूत इंसान बन करके यहां से जाए यह भी साथ-साथ शुभकामनाएं देता हूं।

हमारे देश में डॉक्टरों की कमी, अस्पतालों की कमी, महंगाई दवाइयां। आज किसी मध्यम वर्ग के परिवार में अगर एक व्यक्ति बीमार हो जाए, तो उस परिवार का पूरा अर्थकारण समाप्त हो जाता है। मकान लेना है, नहीं ले पाता। बेटी की शादी करवानी है, नहीं करवा पाता। एक इंसान बीमार हो जाए तो। और ऐसे समय सरकार की जिम्मेदारी होती है कि हर किसी को आरोग्य सेवा उपलब्ध हो, हर किसी को एक सीमित खर्च से आरोग्य सेवा का लाभ मिलना चाहिए। भारत सरकार ने अभी Health Policy घोषित की है। अटल जी की सरकार के बाद, 15 साल के बाद इस सरकार ने Health Policy लाई है। बीच में बहुत काम रह गए, जो मुझे करने पड़ रहे हैं। अब दवाइयां, मैं गुजरात में था तो आपको मालूम है बहुत लोगों को मैं नाराज करता था अब दिल्ली में गया हूं तो देश में भी बहुत लोगों को नाराज करते रहता हूं। हर दिन एक काम करता ऐसा हूं कि कोई न कोई तो मेरे से नाराज हो ही जाता है। अब जो दवाइयां बनाने वाली कंपनियां जिस इंजेक्शन के कभी 1200 रुपया लेते थे, जिन गोलिएं के कभी साढ़े तीन सौ, चार सौ रुपया लेते थे। हमने सबको बुलाया कि भई क्या कर रहे हो, कितनी लागत होती है, क्या खर्चा होता है और नियम बना करके जो दवाई 1200 रुपये में मिलती थी वो 70-80 रुपये में कैसे मिल जाए, जो 300 रुपये में मिलती थी वो 30 रुपये में कैसे मिल जाए। करीब सात सौ दवाइयां, उसके दाम तय कर लिए ताकि गंभीर से गंभीर बीमारी में गरीब से गरीब व्यक्ति को सस्ती दवाई मिले, यह काम किया है। दवाई बनाने वाले मुझसे कितने नाराज होंगे इसका आप अंदाजा कर सकते हैं।

आज heart patient.. हर परिवार में चिंता रहती है heart की। हर घर में भोजन के टेबल पर खाने की चर्चा होती है। वजन कम करो, कम खाओ, चर्चा होती है करते नहीं है कोई। लेकिन dining table चर्चा जरूरत होती है। हर किसी को heart attack की चिंता रहती है और heart में stent लगवाना, अब हम लोग जानकार तो हैं नहीं, डॉक्टर कहता है कि यह लगवाओगे तो 30-40 हजार रुपया होगा, patient पूछता है कि जिंदगी का क्या होगा, वो कहता है कि यह लगवाओगे तो चार-पांच साल तो कोई problem नहीं होगी। फिर दूसरा बताता है कि यह लगवाओगे, imported है तो डेढ़ लाख रुपया लगता है, यह लगवा दिया तो फिर जीवनभर देखने की जरूरत नहीं है। तो गरीब आदमी भी सोचता है कि यार 40,000 खर्च करके चार साल जीना है तो डेढ़ लाख खर्च करके जिंदगी अच्छी क्यों न गुजारे, वो डेढ़ लाख रुपये वाला ले लेता है। मैं stent वालों को बुलाया, मैं कहा कि भई कितना खर्चा होता है, तुम इतने रुपये मांगते हो, सालभर उनसे चर्चा चलती रही आखिरकार दो महीने पहले हमने निर्णय कर दिया जो 40,000 रुपये में stent मिलता है वो उनको 6-7 हजार रुपये में बेचना पड़ेगा, देगा पड़ेगा। जो डेढ़ लाख में देते हैं वो 20-22 हजार में देना पड़ेगा, ताकि गरीब से गरीब व्यक्ति affordable हो।

कभी-कभार तो ऐसे सामान्य व्यक्ति को मुसीबत होती है, ज्ञान होता नहीं और कुछ न कुछ लोग... अब इसके कारण सामाजिक का एक तबका है, बड़ा ताकतवर तबका है, उसकी मेरे प्रति नाराजगी बढ़ना बहुत स्वाभाविक है। लेकिन गरीब के लिए मध्यम वर्ग के लिए आरोग्य सेवाएं सुचारू रूप से उपलब्ध हो, उस दिशा में सरकार एक के बाद एक कदम उठा रही है। अभी जो विजय भाई बता रहे थे। हम अस्पताल में सस्ती दवाई के लिए प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना यह प्रारंभ कर रहे हैं ताकि बहुत सस्ते में.. अभी भी मैंने देखा है कि डॉक्टर लोग पर्चा लिखते हैं, पर्चा ऐसे लिखते हैं ताकि वो गरीब व्यक्ति को बिचारे को समझ नहीं तो उस दवाई की दुकान में माल खरीदने जाता है, जहां महंगी मिलती है। हम कानून व्यवस्था करने वाले हैं डॉक्टर पर्ची लिखेंगे, तो लिखेंगे कि जेनरिक दवा खरीदने के लिए उसके लिए काफी है और दवा खरीदने की जरूरत नहीं है। तभी आदमी, गरीब व्यक्ति सस्ते में दवाई खरीद सकता है। जिस प्रकार से आरोग्य की सेवाओं में बीमार होने के बाद की चिंता है, उससे पहले preventive health care की भी उतनी ही चिंता जरूरी है।

मेरा स्वच्छता अभियान वो सीधा-सीधा आरोग्य से जुड़ा हुआ है। दुनिया में सारे सर्वे कहते हैं कि बच्चे अगर हाथ साबुन से धोए बिना खाना खाते हैं, तो दुनिया में करोड़ों बच्चे इस एक कारण से मौत के शरण हो जाते हैं। क्या हम आदत नहीं डाल सकते। आरोग्य की दृष्टि से स्वच्छता। सूरत के लोगों को स्वच्छता के पाठ पढ़ाने की जरूरत नहीं है। सूरत में जब महामारी आई उसके बाद सूरत ने स्वच्छता को अपना बना लिया। सूरत का स्वाभाव बन गया है स्वच्छता। देश के लिए प्रेरणा है। मैं कल यह रोड शो कर रहा था, मेरे साथ दिल्ली से जो अफसर आए थे, वो रोड शो नहीं देख रहे थे, सफाई देख रहे थे। बोले इतनी सफाई होती है, उनके दिमाग में सफाई भर गई। मैंने कहा आप जहां जाओगे जरा बताना सबको। यह सूरत ने स्वाभाव बना दिया है। स्वच्छता अगर भारत का स्वाभाव बने तो हमारे अरबों-खरबों रुपये बीमारी के पीछे खर्च होने बंद हो जाएंगे। हमारे गरीब एक बार बीमार हो जाते हैं, एक ऑटो रिक्शा, ड्राइवर बीमार हो जाए तो सिर्फ वो इंसान बीमार नहीं होता उसका परिवार तीन दिन के लिए भूखा रह जाता है, घर में कोई कमाने वाला नहीं होता। और इसलिए स्वच्छता.. मैं योग को ले करके पूरे विश्व में आंदोलन चला रहा हूं। 21 जून को सूरत भी शानदार योग का कार्यक्रम करके दिखाए। wellness के लिए योग, शरीर स्वास्थ्य के लिए आज जीवन का हिस्सा बनता जा रहा है। हमने इंद्रधनुष योजना के तहत देशभर में उन माताओं को, उन बालकों को खोज रहे हैं, जिनका टीकाकरण नहीं हुआ। टीकाकरण का अभियान चलाते हैं। दो करोड़ से ज्यादा ऐसी माताएं-बहनों को खोजा है, जिन्होंने टीकाकरण गांव में हो रहा था, लेकिन उन्होंने नहीं लगवाया है। सरकार ने खोज-खोज कर लोगों की सेवा करने के लिए बीड़ा उठाया है। लेकिन जन आंदोलन आवश्यक होता है, जन सहकार आवश्यक होता है।

कभी-कभी हम लोग यह सोचते हैं कि देश आजाद होने के बाद एक ऐसा माहौल बन गया है कि सब कुछ सरकार करेगी, लेकिन हमारा देश, उसका चरित्र अलग है। हमारा देश सरकारों से न चला है न बना है। हमारा देश न राजाओं से चला है न राजाओं ने बनाया है। हमारा देश न नेताओं से चला है न नेताओं ने बनाया है। हमारा देश चला है जनशक्ति के भरोसे, जन सेवा भाव के भरोसे। जिसके जन-जन में सेवा परमो धर्म, यह उनकी प्रकृति रही है। आप मुझे बताइये गांव-गांव आपको धर्मशालाएं दिखती हैं। हर तीर्थ यात्रा के बाद हजारों लोग रह सके, इतनी धर्मशालाएं हैं। दुनिया की कितने बड़े होटल से भी ज्यादा रूम होते हैं इन धर्मशालाओं के। दो-दो हजार कमरों की धर्मशालाएं होती हैं हमारे देश में। किसने बनाई? सरकारों ने नहीं बनाई, जतना जनार्दन ने बनाई है। गांव-गांव पानी नहीं होते थे, कुएं होते थे, बावड़ी होती थी। कौन बनाता था? सरकारें नहीं बनाती थी, जनता जनार्दन बनाती थी। गो-शालाएं क्या सरकार बनाती थी? जनता जनार्दन बनाती थी। पुस्तकालय सरकार बनाती थी, जनता जनार्दन बनाती थी। हमारे देश का यह मूल चरित्र रहा है सामाजिक जीवन के सारे कामों को करना सामाजिक की सामूहिक शक्ति का स्वाभाव रहा था। लेकिन आजादी के बाद धीरे-धीरे उसमें कमी आने लगी। फिर से एक बार दोबारा वो माहौल बना है। हर किसी को लगता है कि मैं समाज के लिए कुछ करूंगा, मैं सामूहिक रूप से कुछ करूंगा, मैं समाज की भलाई के कुछ करूंगा, उस दिशा में आज काम हो रहा है। मैं सूरत में बैठे हुए खास करके सौराष्ट्र के जितने लोग हैं। छोटे से छोटा रतन कलाकार भी उसके दिल में एक चीज़ मैंने हमेशा देखी है, अपने गांव में कुछ न कुछ अच्छा करने के लिए वो कुछ न कुछ देता रहता है। यह छोटी बात नहीं है जी। छोटा रतन कलाकार है। कोई ज्यादा income नहीं है। बड़ी मुश्किल से महीना निकालता है। लेकिन खुद के गांव में कुछ होता है, तो मैं सूरत रहता हूं। गांव वाले कहते हैं कि भई जरा तुम स्कूल में इतना कर दो, गांव में इतना कर दो, वो रतन कलाकार कष्ट झेल करके भी कर देता है। यहां बैठे हर प्रमुख लोगों ने अपने गांव में उत्तम से उत्तम काम किए। कुछ न कुछ ऐसा किया है, अपने मां-बाप के नाम पर किया है, अपने परिवारजनों के नाम पर किया है, कुछ न कुछ किया है। गांव के विकास के अंदर योगदान दिया है। और आज भी गांव के साथ वैसे का वैसे नाता रखा है। दीवाली के दिन मैं अगर सौराष्ट्र जाना है, तो बस मैं टिकट नहीं मिलती है। यह जो लगाव है, यह समाज का उत्तम लक्षण है। और मैं चाहूंगा हमारे आने वाली पीढ़ियों में भी यह बना रहा। पुरानी पीढ़ी के लोग रहे, तब तक चले ऐसा नहीं, आने वाली पीढ़ियों में भी बना रहे। यह इस पूरे गुजरात की अमानत बनेगी। मैं फिर एक बार आज इस अस्पताल के उद्घाटन समारोह के समय आप सबके बीच आने का अवसर

मिला, मैं आपका आभारी हूँ और जैसा मथुर दास कह रहे थे, यहां से बयाना जा रहा हूँ, वहां भी पानी का कार्यक्रम करने जा रहा हूँ। --- जा रहा हूँ वहां भी पानी का कार्यक्रम कर रहा हूँ गुजरात ने पानी को ही अपनी एक बहुत बड़ी ताकत बना दिया और उसी ताकत से गुजरात आगे बढ़ रहा है और बढ़ करके रहेगा। इसी एक विश्वास के साथ मैं सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। उत्तम स्वास्थ्य के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

जुलाई महीने में मैं इस्राइल जा रहा हूँ। आप लोगों में से हर किसी का इस्राइल से नाता है। मैं देश का पहला प्रधानमंत्री हूँ जो इस्राइल जा रहा है और डायमंड का कारोबार और इस्राइल से आज सीधा-सीधा नाता है और इसलिए वहां मैं आपका प्रतिनिधि बन करके भी जा रहा हूँ। यह बात मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी/ तारा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

03-मई-2017 15:20 IST

हरिद्वार में पतंजलि अनुसंधान संस्थान के उद्घाटन समारोह में प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

विशाल संख्या में पधारें प्यारे भाईयो और बहनों,

आज, ये मेरा सौभाग्य था कि केदारनाथ जा करके बाबा के दर्शन करने का मुझे सौभाग्य मिला, और वहां से आप सबके बीच आने का और आप सबके आशीर्वाद पाने का सौभाग्य मिला। मुझे पता नहीं था, बाबा ने surprise दे दिया। बड़ी भावुकता के साथ मुझे विशेष सम्मान से आभूषित किया, अलंकृत किया। मैं स्वामी जी का, इस पतंजलि पूरे परिवार का अंतःकरणपूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ।

लेकिन, जिन लोगों के बीच मैं मेरा लालन-पालन हुआ है, जिन लोगों ने मुझे संस्कारित किया है, मुझे शिक्षा-दीक्षा दी है, उससे मैं इस बात को भली-भांति समझता हूँ कि जब आपको सम्मान मिलता है, तो उसका मतलब ये होता है कि आपसे ये, ये, ये प्रकार की अपेक्षाएँ हैं, जरा भी आगे-पीछे मत हो; इसको पूरा करो। तो एक प्रकार से मेरे सामने मुझे क्या करना चाहिए, कैसे जीना चाहिए, इसका एक do's and don'ts का बड़ा दस्तावेज गुरुजी ने रख दिया है।

लेकिन सम्मान के साथ-साथ आप सबके आशीर्वाद, सवा सौ करोड़ देशवासियों के आशीर्वाद की ताकत पर मेरा पूरा भरोसा है। मेरा अपने पर उतना भरोसा नहीं है, मुझ पर इतना भरोसा नहीं है, जितना की मुझे आपके और देशवासियों के आशीर्वाद की ताकत पर भरोसा है। और इसलिए वो आशीर्वाद ऊर्जा का स्रोत है, संस्कार उसकी मर्यादाओं में बांध करके रखते हैं, और राष्ट्र के लिए समर्पित जीवन जीने के लिए नित्य नई प्रेरणा मिलती रहती है।

मैं आज जब आपके बीच में आया हूँ, तो आप भी भली-भांति अनुभव करते होंगे कि आप ही के परिवार का कोई सदस्य आपके बीच में आया है। और मैं यहाँ पर पहली बार नहीं आया हूँ, आप लोगों बीच बार-बार आने का मुझे सौभाग्य मिला है, एक परिवार के सदस्य के नाते आने का सौभाग्य मिला है। और ये भी मेरा सौभाग्य रहा है कि मैंने स्वामी रामदेव जी को, किस प्रकार से वो दुनिया के सामने उभर करके आते गए; बहुत निकट से मुझे देखने का सौभाग्य मिला है। उनका संकल्प और संकल्प के प्रति समर्पण, यही उनकी सफलता की सबसे बड़ी जड़ी-बूटी है। और ये जड़ी-बूटी बालकृष्ण आचार्य जी की खोजी हुई जड़ी-बूटी नहीं है; ये स्वामी जी ने खुद ने खोजी हुई जड़ी-बूटी है। बालकृष्ण जी की जड़ी-बूटी शरीर को स्वस्थ रखने के लिए काम आती है, लेकिन स्वामी रामदेव जी वाली जड़ी-बूटी हर संकटों को पार कर-करके नैया को आगे बढ़ाने की ताकत देने वाली होती है।

आज मुझे Research Centre के उद्घाटन का सौभाग्य मिला। हमारे देश का, अगर भूतकाल की तरफ थोड़ी नजर करें; तो एक बात साफ ध्यान में आती है, हम इतने छाये हुए थे, इतने पहुंचे हुए थे, इतनी ऊँचाइयों को प्राप्त किए हुए थे, कि जब दुनिया ने इसे देखा तो उनके लिए तो वहाँ तक पहुंचना शायद संभव नहीं लगता था और इसलिए उन्होंने न मार्ग अपनाया था, जो हमारा श्रेष्ठ है उसे ध्वस्त करने का, उसको नेस्त नाबूद करने का। और गुलामी का पूरा कालखंड, हमारी पूरी शक्ति, हमारे ऋषि, मुनि, संत, आचार्य, किसान, वैज्ञानिक, हर किसी को; जो श्रेष्ठ था उसको बचाए रखने के लिए 1000, 1200 साल के गुलामी कालखंड में उनकी शक्ति खतमा कर दी।

आजादी के बाद जो बचा था उसे पनपाते, उसे पुरस्कृत करते, समयानुकूल परिवर्तन करते, नए रंग-रूप के साथ सज्जो करते, और आजाद भारत की सांस के बीच उसे विश्व के सामने हम प्रस्तुत करते; लेकिन वो नहीं हुआ। गुलामी के कालखंड में नष्ट करने का प्रयास हुआ, आजादी का एक लम्बा कालखंड ऐसा गया जिसमें इन श्रेष्ठताओं को भुलाने का प्रयास हुआ। दुश्मनों ने नष्ट करने की कोशिश की, उससे तो हम लड़ पाये, निकल पाये, बचा पाये, लेकिन अपनों ने जब भुलाने का प्रयास किया तो हमारी तीन-तीन पीढ़ियाँ दुविधा के कालखंड में ज़िंदगी गुजारती रहीं।

मैं आज बड़े गर्व के साथ कहता हूँ, बड़े संतोष के साथ कहता हूँ कि अब भुलाने का वक्त नहीं है, जो श्रेष्ठ है उसका गौरव करने का वक्त है, और यही वक्त है जो विश्व में भारत की आन-बान-शान का परिचय करवाता है। लेकिन हम इस बात को न भूलें कि भारत दुनिया में इस ऊँचाई पर कैसे था। वो इसलिए था कि हजारों वर्ष पूर्व हमारे पूर्वजों ने

लगातार innovation में अपनी जिंदगी खपाई थी। नई-नई खोज करना, नई-नई चीजों को प्राप्त करना, और मानव-जाति के कल्याण के लिए उसको प्रस्तुत करना समय, अनुकूल ढालते रहना। जब से innovation की, research की उदासीनता हमारे भीतर घर कर गई हम दुनिया के सामने प्रभाव पैदा करने में असमर्थ होने लगे।

कई वर्षों के बाद जब IT Revaluation आया, जब हमारे देश के 18, 20, 22 साल के बच्चे mouse के साथ खेलते-खेलते दुनिया को अचरज करने लगे, तब फिर से दुनिया का ध्योन हमारी तरफ गया। IT ने दुनिया को प्रभावित किया। हमारे देश के 18, 20 साल की उम्र के नौजवानों ने विश्व को प्रभावित कर दिया। Research, Innovation, इसकी क्यो ताकत होती है, हमने अपनी आंखों के सामने देखा है। आज पूरा विश्व, Holistic Health Care, इसके विषय में बड़ा संवेदनशील है, सजग है। लेकिन रास्ता नहीं मिल रहा है। भारत के ऋषि-मुनियों की महान परम्परा, योग, उस पर विश्व का आकर्षण पैदा हुआ है, वे शांति की तलाश में हैं। वो बाहर की दुनिया से तंग आ करके भीतर की दुनिया को जानना, परखने के लिए प्रयास कर रहे हैं।

ऐसे समय हम लोगों का कर्तव्य बन जाता है कि आधुनिक स्वभरूप में Research & Analysis के साथ योग एक ऐसा विज्ञान है; तन और मन की तंदुरुस्ती के लिए, आत्मा की चेतना के लिए, ये शास्त्र कितना सहज उपलब्ध हो सकता है। मैं बाबा रामदेव जी को अभिनंदन करता हूं, उन्हें योग एक आंदोलन बना दिया। सामान्यतः मानवी में विश्वास पैदा कर दिया कि योग के लिए हिमालय की गुफाओं में जाने की जरूरत नहीं है, अपने घर में kitchen के बगल में बैठ करके भी योग कर सकते हो, फुटपाथ पर भी कर सकते हो, मैदान में भी कर सकते हो, बगीचे में भी कर सकते हो, मंदिर के परिसर में भी कर सकते हो।

ये बहुत बड़ा बदलाव आया है। और आज उसका परिणाम है कि 21 जून को जब विश्व अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाता है, दुनिया के हर देश में योग का उत्सव मनाया जाता है, अधिकतम लोग उसमें जुड़े, उसके लिए प्रयास होता है। मुझे विश्वास है कि जितने लोगों से मिलना होता है, मेरा अनुभव है कि देश की बात करेंगे, विकास की बात करेंगे, Investment की चर्चा करेंगे, राजनीतिक परिदृश्य की चर्चा करेंगे, लेकिन एक बात अवश्य करते हैं, मेरे साथ योग के संबंध में तो एक-दो सवाल जरूर पूछते हैं। ये जिज्ञासा पैदा हुई है।

हमारे आयुर्वेद की ताकत, थोड़ा-बहुत तो हमने ही उसे नुकसान पहुंचा दिया। आधुनिक विज्ञान का जो medical science है उनको लगा कि आपकी सारे बातें कोई शास्त्र आधारित नहीं हैं; आयुर्वेद वालों को लगा कि आपकी दवाइयों में दम नहीं है, अब आप लोगों को ठीक कर देते हो लेकिन ठीक होते नहीं हैं। तुम बड़े कि हम बड़े, इसी लड़ाई में सारा समय बीतता गया। अच्छा होता कि हमारी सभी ज्ञान, आधुनिक से आधुनिक ज्ञान भी, उसको भी हमारी इन परम्पराओं के साथ जोड़ करके आगे बढ़ाया जाता तो शायद मानवता की बहुत बड़ी सेवा हुई होती।

मुझे खुशी है पतंजलि योग विद्यापीठ के माध्यम से बाबा रामदेव जी ने जो अभियान चलाया, आंदोलन चलाया है, उसमें आयुर्वेद का महिमा-मंडन, वहां अपने-आपको सीमित नहीं रखा है। दुनिया जो भाषा में समझती है, research के जिन आधारों पर समझती है, medical science में प्रस्थापित व्यवस्थाओं के तहत समझती है; बाबा रामदेव ने बीड़ा उठाया है, उसी भाषा में भारत के आयुर्वेद को वो ले करके आएंगे और दुनिया को प्रेरित करेंगे। एक प्रकार से ये हिन्दु स्तन की सेवा कर रहे हैं। हजारों साल से हमारे ऋषियों-मुनियों ने तपस्या की है, जो प्राप्त किया है वो दुनिया को बांटने के लिए निकले हैं, वैज्ञानिक अधिष्ठान पर निकले हुए हैं, और मुझे विश्वास है और आज मैंने जो Research Centre देखा, कोई भी आधुनिक Research Centre देखिए; बिल्कुल उसकी बराबरी में खड़ा हुआ है, मां गंगा के किनारे पर ये काम।

और इसलिए मैं बाबा को हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं। भारत सरकार, जब अटल जी की सरकार थी देश में, तब हमारे देश में एक Health Policy आई थी। इतने सालों के बाद जब हमारी सरकार बनी, तो फिर से हम देश के लिए एक Health Policy ले करके आए हैं। Holistic Health Care का view ले करके आए हैं। और अब दुनिया सिर्फ Healthy रहना चाहती है ऐसा नहीं है, बीमारी न हो वहां तक अटकना नहीं चाहती है; अब लोगों को Wellness चाहिए, और इसलिए solution भी holistic देने पड़ेंगे। Preventive Health Care पर बल देना पड़ेगा, और Preventive Health Care का उत्तम से उत्तम रास्ता जो है, और सस्ते से सस्ता रास्ता है, वो है स्वच्छता। और स्वच्छता में कौन क्या करता है, वो बाद पे छोड़ें हम। हम तय करें, सवा सौ करोड़ देशवासी तय करें कि मैं गंदगी नहीं करूंगा। कोई बड़ा संकल्प लेने की जरूरत नहीं, इसमें जेल जाने की जरूरत नहीं है, फांसी पर लटकने की जरूरत नहीं है, देश के लिए सीमा पर जा करके जवानों की तरह मरने-मिटने की जरूरत नहीं है; छोटा सा काम- मैं गंदगी नहीं करूंगा।

आपको कल्पना है एक डॉक्टर जितनी जिंदगी बचा लेता है, उससे ज्यादा बच्चों की जिंदगी आप गंदगी न करके बचा सकते हैं। आप एक गरीब को दान-पुण्य दे करके जितना पुण्य कमाते हो, गंदगी न करके एक गरीब जब स्वस्थ रहता

है, तो आपका दान रुपयों में देते हैं, उससे भी ज्यादा मूल्यवान हो जाता है। और मुझे खुशी है कि देश की जो नई पीढ़ी है, आने वाली पीढ़ी; छोटे-छोटे बालक, हर घर में वो झगड़ा करते हैं। अगर परिवार के वृद्ध व्यक्ति ने, बुजुर्ग ने कोई एक अगर छोटी सी चीज फेंक दी, कार में जा रहे हैं अगर पानी का bottle बाहर फेंक दिया तो बेटा कार रुकवाता है, छोटा पोता- पांच साल का, कार रुकवाता है, ठहरो, मोदी दादा ने मना किया है ये bottle वापिस ले आओ; ये माहौल बन रहा है। छोटे-छोटे बालक भी मेरे इस स्वच्छता आंदोलन के सिपाही बन गए हैं। और इसलिए Preventive Health Care, इसको हम जितना बल देंगे, हम हमारे देश के गरीबों की सबसे ज्यादा सेवा करेंगे।

गंदगी कोई नहीं करता है, गंदगी हम करते हैं। और हमीं फिर गंदगी पर भाषण देते हैं। अगर एक बार हम देशवासी गंदगी न करने का फैसला कर लें, इस देश से बीमारी को निकालने में, तदुरुस्ती को लाने के लिए हमें कोई सफलता पाने में रुकावट नहीं आएगी।

हमारी उदासीनता इतनी है कि हम इतना बड़ा हिमालय, हिमालय की जड़ी-बूटी, भगवान रामचंद्र जी और लक्ष्मण जी की घटना से परिचित, हनुमान जी जड़ी-बूटी के लिए क्या-क्या नहीं करते थे, वो सारी बातें परिचित, और हम इतने सहज हो गए थे कि दुनिया के देश, जिनको जड़ी-बूटी क्यार होती है, ये मालूम नहीं था; लेकिन जब उनको पता कि इसका बड़ा commercial value है, दुनिया के और देशों ने patent करवा दिया। हल्दी का patent भी कोई और देश करवा देता है, इमली का patent भी कोई और देश करवा देता है। हमारी ये उदासीनता, अपनी शक्ति को भुला देने की आदतें, इसने हमारा बहुत नुकसान किया है।

आज विश्व में Herbal Medicine, उसका एक बहुत बड़ा मार्केट खड़ा हुआ है। लेकिन जितनी मात्रा में दुनिया में इस Herbal Medicine को पहुंचाने में भारत को जो ताकत दिखानी चाहिए, अभी बहुत कुछ करने की बाकी है।

इस पतंजलि संस्थान के द्वारा ये जो Research और Innovation हो रहे हैं, ये दुनिया के लोगों को Holistic और Wellness के लिए जो structure है, उनको ये दवाइयां आने वाले दिनों में काम आएगी। हमारे देश में बहुत वर्षों पहले भारत सरकार ने आयुर्वेद का प्रचार कैसे हो, उसके लिए एक हाथी कमीशन बिठाया था, जयसुखलाल हाथी करके, उनका एक कमीशन बिठाया था। उस कमीशन ने जो रिपोर्ट दी थी, वो रिपोर्ट बड़ी interesting थी। उस रिपोर्ट के प्रारंभ में लिखा है कि हमारे आयुर्वेद इसलिए लोगों तक नहीं पहुंचता है क्यों कि उसकी जो पद्धति है, वो आज के युग के अनुकूल नहीं है। वो इतनी सारी थैला-भर जड़ी-बूटी देंगे और फिर कहेंगे इसको उबालना, इतने पानी में उबालना, फिर इतना रस रहेगा, एक चम्मच में लेना, फिर इसमें फलाना जोड़ना, ढिकना जोड़ना; और फिर लेना। तो जो सामान्यर व्यसक्ति होता है उसको लगता है कि भई ये कौन कूड़ा-कचरा करेगा, उसके बजाय चलो भाई medicine ले लें, दवाई की गोली खा लें, अपनी गाड़ी चल जाएगी। और इसलिए उन्होंने कहा था कि सबसे पहली आवश्यकता है, बहुत साल पहले का report है ये। सबसे पहली आवश्यकता है आयुर्वेदी दवाओं का packaging. अगर उसका packaging, modern दवाइयों की तरह कर देंगे, तो लोग ये Holistic Health Care की तरफ मुड़ जाएंगे। और आज हम देख रहे हैं कि हमें वो उबालने वाली जड़ी-बूटियां कहीं लेने के लिए जानी नहीं पड़ती है, हर चीज ready-made मिलती है।

मैं समझता हूं कि आचार्य जी ने अपने-आपको इसमें खपाया हुआ है। और आज जिस किताब का लोकार्पण करने का मुझे अवसर मिला, मुझे विश्वास है कि दुनिया का इस किताब पर ध्यान जाएगा। Medical Science से जुड़े हुए लोगों का ध्यान जाएगा। प्रकृतिदत्त व्यावस्था कितनी सामर्थ्यवान है, उस सामर्थ्य को अगर हम समझते हैं तो जीवन कितना उज्ज्वल हो सकता है, ये अगर व्यक्ति को एक खिड़की खोल करके दे देता है, आगे बढ़ने के लिए बहुत बड़ा अवसर दे देता है।

मुझे विश्वास है कि बालकृष्ण जी की ये साधना, बाबा रामदेव का mission mode में समर्पित ये काम और भारत की महान उज्ज्वल परम्परा, उसको आधुनिक रूप-रंग के साथ, वैज्ञानिक अधिष्ठा न के साथ आगे बढ़ाने का जो प्रयास है, वो भारत के लिए विश्वन में अपनी एक जगह बनाने का आधार बन सकता है। दुनिया का बहुत बड़ा वर्ग है जो योग से जुड़ा है, आयुर्वेद से भी जुड़ना चाहता है, हम उस दिशा में प्रयास करेंगे।

मैं फिर एक बार आप सबके बीच आने का मुझे सौभाग्य मिला, विशेष रूप से मुझे सम्मानित किया, मैं सिर झुका करके बाबा को प्रणाम करता हूं, आप सबका अभिनंदन करता हूं, और मेरी तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं। धन्यवाद।

अतुल तिवारी/ अमित कुमार / निर्मल शर्मा

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

17-अक्टूबर-2017 13:00 IST

द्वितीय आयुर्वेद दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान को राष्ट्र को समर्पित करने पर प्रधानमंत्री के
भाषण का मूल पाठ

यहां उपस्थित आयुर्वेद प्रेमी सभी महानुभव।

धन्वंतरि जयंती और आयुर्वेद दिवस की आप सभी को और पूरे देश को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

एक प्रकार से विधिवत रूप से दीपावली का त्यौहार भी आरम्भ हो जाता है। मैं देशवासियों को और विश्व में फैले सभी भारतीय समुदाय को दीपावली के पावन पर्व की बहुत - बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

मुझे बताया गया कि देश की बहुत सी आयुर्वेदिक कॉलेज Technology के माध्यम से इस कार्यक्रम में जुड़ी हुई हैं उन सबका भी मैं स्वागत करता हूँ। देश के पहले अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान पर भी आप सबको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्वंतरि जयंती को आयुर्वेद दिवस के रूप में मनाने और इस संस्थान की स्थापना के लिए आयुष मंत्रालय को और उस मंत्रालय से जुड़े सभी महानुभव को मैं हृदय से बहुत-बहुत साधुवाद देता हूँ।

साथियों, कोई भी देश विकास की कितनी ही चेष्टा करे, कितना ही प्रयत्न करे, लेकिन वो तब तक आगे नहीं बढ़ सकता, जब तक वो अपने इतिहास, अपनी विरासत, अपनी संस्कृति, अपनी उज्ज्वल परम्पराएं, उनके प्रति अगर वो गर्व करना नहीं जानता। अपनी विरासत को छोड़कर के आगे बढ़ने वाले देशों की पहचान खत्म होना तय होता है।

साथियों, अगर हमारे देश का इतिहास देखें, तो हम पाएंगे कि वो दौर इतना समृद्धशाली था , शक्तिशाली था कि जब बाकी दुनिया ने उसके विषय में जाना पहचाना, देखा तो लग गया कि भारत के ज्ञान और बुद्धिमता से मुकाबला असंभव था। और इसलिए इतिहास बताता है कि उन्होंने अलग मार्ग अपनाया। हमारे पास जो श्रेष्ठ है, उसे ध्वस्त करना ये रास्ता शायद उनको ज्यादा उचित लगा। अपनी लकीर लम्बी करने की बजाय हमारी लकीर छोटी करने के लिये शक्तियां जुट गईं।

और गुलामी के कालखंड में हमारी ऋषि परंपरा, हमारे आचार्य, हमारे किसान, हमारे वैज्ञानिक, हमारे ज्ञान, हमारे योग, हमारे आयुर्वेद, इन सभी की शक्ति का उपहास उड़ाया गया, उसे कमजोर करने की कोशिश हुई और यहां तक की उन शक्तियों पर ही हमारे लोगों के बीच आस्था कम होने लगी।

जब गुलामी से मुक्ति मिली, तो एक उम्मीद थी कि जो बच पाया है, उसे संरक्षित किया जाए, समय के अनुकूल परिवर्तन किया जाए, लेकिन ये भी दुर्भाग्य से प्राथमिकता नहीं बनी। जो था, उसको, उसके हाल पर छोड़ दिया गया।

हमारी शक्तियों को गुलामी के कालखंड में नष्ट करने का प्रयास हुआ और आजादी के बाद एक लंबा समय ऐसा आया जब इन शक्तियों को भुलाने के प्रयास बंद नहीं हुए। एक तरह से अपनी ही विरासत से मुंह मोड़ लिया गया। इन्हीं वजहों से ऐसी तमाम जानकारियों के पेटेंट दूसरे देशों के पास चले गए, जिन्हें हम कभी दादी मां के नुस्खे के तौर पर हर घर में इस्तेमाल करते थे।

वो आज किसी और के Intellectual Property Right बन गया। आज मुझे गर्व है कि पिछले तीन वर्षों में इस स्थिति को काफी हद तक बदलने का प्रयास हुआ है। जो हमारी विरासत है, जो श्रेष्ठ है, उसकी प्रतिष्ठा जन-जन के मन में आज स्थापित होना पुनः आरम्भ हुआ है।

आज जब हम सभी आयुर्वेद दिवस पर एकत्र हुए हैं, या जब 21 जून को लाखों की संख्या में लोग घर से बाहर निकलकर के सामूहिक रूप से योग दिवस मनाते हैं, तो अपनी विरासत के इसी गर्व से भरे होते हैं। जब अलग-अलग देशों में उस दिन लाखों लोग योग करते हैं, तो उन तस्वीरों को देखकर के लगता है कि हां, लाखों लोगों को जोड़ने वाला ये योग भारत की विरासत है। मानव जाति की विरासत, और हर युग में हर समय हर भू-भाग के लोगों ने उसमें कुछ न कुछ Contribution किया है कुछ न कुछ नया जोड़ा है। जो योग भारत की विरासत रहा, वो अब विस्तारित होते - होते पूरी मानव जाति की विरासत होता जा रहा है।

ये बदलाव सिर्फ तीन वर्षों की देन है और निश्चित तौर पर इसमें आयुष मंत्रालय की भी बहुत बड़ी भूमिका है।

साथियों, आयुर्वेद सिर्फ एक चिकित्सा पद्धति नहीं है। इसके दायरे में सामाजिक स्वास्थ्य, सार्वजनिक स्वास्थ्य, पर्यावरण स्वास्थ्य, जैसे अनेक विषय भी उसके दायरे में आते हैं। इसी आवश्यकता को समझते हुए ये सरकार आयुर्वेद, योग और अन्य आयुष पद्धतियों के Public Healthcare system में integration पर जोर दे रही है। आयुष को सरकार ने अपने चार priority areas में रखा हुआ है। एक अलग मंत्रालय बनाने के साथ ही हमने नेशनल हेल्थ पॉलिसी का निर्माण करते समय, स्वास्थ्य सेवाओं और आयुष सिस्टम के integration के लिए व्यापक नियम बनाए हैं, दिशानिर्देश दिए हैं।

साथियों, सरकार ये मानकर और ये ठानकर चल रही है कि आयुष का स्वास्थ्य सेवा में integration पहले की तरह सिर्फ फाइलों तक सीमित नहीं रहेगा उसे जमीन तक उतारा जाएगा। इस दिशा में आयुष मंत्रालय की तरफ से अनेक प्रकार के उपक्रम प्रारम्भ किये गए हैं। राष्ट्रीय आयुष मिशन शुरू करना, स्वास्थ्य रक्षण कार्यक्रम चलाना, मिशन मधुमेह, आयुष ग्राम की परिकल्पना ऐसे तमाम विषय हैं, जिनके बारे में अभी यहां श्रीमान श्रीपाद नाइक जी चर्चा की है।

साथियों, आयुर्वेद के विस्तार के लिए ये बहुत आवश्यक है कि देश के हर जिले में आयुर्वेद से जुड़ा एक अच्छा, सारी सुविधाओं से युक्त अस्पताल जरूर हो। इस दिशा में आयुष मंत्रालय तेजी से काम कर रहा है और तीन वर्ष में ही 65 से ज्यादा आयुष अस्पताल विकसित किए जा चुके हैं।

आज दिल्ली में एम्स की ही तर्ज पर एम्स की ही तरह अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान का भी उद्घाटन भी इसी कड़ी का हिस्सा है। अभी शुरूआती तौर पर इसमें हर रोज साढ़े सात सौ से ज्यादा मरीज आ रहे हैं। आने वाले दिनों में मरीजों की संख्या दोगुनी होने का अनुमान है। एक ऐसा कार्यक्रम का उद्घाटन है...आमतौर पर कार्यक्रम में बोला जाता है की आपका काम बढ़े पर इस कार्यक्रम में मैं यह नहीं चाहता कि मरीजों की संख्या बढ़े और इसलिये मेरी शुभकामना ऐसी है कि Wellness का ऐसा वातावरण बने कि लोगों को यहां तक आने की नौबत न आए। इस संस्थान को आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर से युक्त बनाया गया है। इसकी मदद से कई गंभीर बीमारियों के आयुर्वेदिक उपचार में भी अच्छी खासी मदद मिलेगी। मुझे प्रसन्नता है कि आज आयुर्वेद संस्थान की स्थापना से आयुर्वेद की विद्या, आयुर्वेद की ज्ञान संपदा को फिर एक बार पुनः बल मिल रहा है। एक नई ऊर्जा मिल रही है।

ये भी बहुत आशाजनक स्थिति है कि ये आयुर्वेदिक संस्थान एम्स, इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रीसर्च और कुछ अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ मिलकर काम करेगा। मुझे उम्मीद है कि इस रास्ते पर चलते हुए अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान इंटर- डिस्प्लीनरी और इंटीग्रेटिव हेल्थ प्रैक्टिस का मुख्य केंद्र बनेगा।

साथियों, आयुर्वेद के गुणों की लंबी सूची है। दुनिया अब सिर्फ Healthy ही नहीं रहना चाहती, अब उसे Wellness चाहिए और ये चीज उसे आयुर्वेद और योग से मिल सकती है। आज विश्व के सभी देशों में Back to the Basics, Back to the Nature यानि 'पुनः प्रकृति की ओर' ये भाव प्रबल होता जा रहा है। उसकी तरफ लोगों का झुकाओ बढ़ता जा रहा है। ऐसी पद्धतियों की तरफ, जो सीधे प्रकृति के साथ जोड़ दे, उसकी तरफ लोगों का आकर्षण पैदा हो रहा है। ऐसे में आयुर्वेद के लिए अनुकूल माहौल बनना जरा भी कठिन नहीं है। बस हमें आज की आवश्यकताओं में आयुर्वेद की उपयोगिता को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाना होगा।

क्या सचमुच में आज जो आयुर्वेद पढ़कर के निकलते हैं, उसमें कितने परसेंट रहे हैं, जिनकी शत प्रतिशत श्रद्धा इस विज्ञान पर समर्पित है। आप देखिये जैसे ही वो अस्पताल खोलता है, ओपीडी शुरू करता है। पेशेंट कहता है जरा जल्दी ठीक हो जाए तो अच्छा होगा। मजदूरी पर जाना है, काम करने भी जाना है। परिवार में तकलीफ हो रही है, तो आयुर्वेद डॉक्टर को भी लगता है कि अच्छा होगा कि गोली तो एलोपैथी वाली दे दो। इंजेक्शन लगा दो। बाहर साइनबोर्ड तो लगा है आयुर्वेद का, लेकिन भीतर शत प्रतिशत समर्पण का भाव नहीं है। आयुर्वेद की फिर से एक बार विश्व में स्वीकृति बनाने की पहली आवश्यकता यह है कि आयुर्वेद से पढ़े लिखे नौजवानों का आयुर्वेद के प्रति शत प्रतिशत समर्पण चाहिए। अगर हमें ही अपना भरोसा नहीं है। बचपन में चुटकुला सुनते थे कि एक आदमी ने खाने का ढाबा खोला और जब उसके यहाँ एक आदमी खाना खाने आया तो मालिक नहीं मिला। नौकर से आदमी ने पूछा की मालिक कहाँ है? तो उसने बताया कि वह तो

सामने के होटल पर खाना खाने गए हैं।

ऐसे में कौन उसके यहाँ खायेगा और इसलिये दोस्तों आज जरूरत इस बात की भी है कि आयुर्वेद से जुड़े विशेषज्ञ आयुर्वेद की सेवाओं का विस्तार करें। उन्हें उन क्षेत्रों के बारे में भी सोचना होगा, जहां आयुर्वेद और ज्यादा प्रभावी हो सकता है। ऐसा ही एक क्षेत्र है- Sports का। आपने देखा होगा कि हाल के कुछ वर्षों में फिजियोथेरेपी करने वाले डॉक्टरों की भूमिका कितनी ज्यादा बढ़ गई है। बड़े-बड़े खिलाड़ी अपने पर्सनल फिजियोथेरेपिस्ट रखते हैं। बड़े-बड़े खिलाड़ी जाने-अनजाने दर्द की दवाइयों के फेर में भी फंस जाते हैं। आपको-मुझे-हम सभी को मालूम है कि आयुर्वेद और योग इस विषय में ज्यादा प्रभावी हो सकते हैं। आयुर्वेद और योग आधारित फिजियोथेरेपी में किसी तरह की प्रतिबंधित दवा के गलती से सेवन का कोई खतरा नहीं रहेगा।

स्पोर्ट्स की तरह ही हमारे सुरक्षाबलों के लिए भी योग और आयुर्वेद काफी महत्वपूर्ण हैं। हमारे जवान बहुत ही मुश्किल परिस्थितियों में देश की रक्षा करते हैं। कभी पोस्टिंग पहाड़ों पर होती है, तो कभी रेगिस्तान में, तो कभी बीच समंदर के बीच, तो कभी घने जंगलों में। अलग-अलग मौसम, अलग-अलग माहौल अलग - अलग परिस्थितियां। ऐसे में आयुर्वेद और योग उन्हें कितनी ही बीमारियों से बचाकर रख सकता है। मानसिक तनाव दूर रख सकता है। एकाग्रता बढ़ाने में काम आ सकता है, immune system मजबूत करने में योग और आयुर्वेद बहुत कारगर साबित हो सकते हैं।

क्वालिटी आयुर्वेदिक शिक्षा पर भी बहुत ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। बल्कि और इसका दायरा भी बढ़ाया जाना चाहिए। जैसे पंचकर्म थेरेपिस्ट, आयुर्वेदिक डायटीशियन, पराकृति एनालिस्ट, आयुर्वेद फार्मासिस्ट, आयुर्वेद की पूरी सपोर्टिंग chain को भी विकसित किया जाना चाहिए।

इसके अलावा मेरा एक सुझाव और भी है कि आयुर्वेदिक शिक्षा में कराए जा रहे अलग-अलग कोर्स के अलग-अलग स्तर पर एक बार फिर से उनको reroute करने की मुझको जरूरत लगती है। जब कोई छात्र Bachelor of Ayurveda, Medicine and Surgery- BAMS का कोर्स करता है, तो प्राकृतिक, आयुर्वेदिक आहार-विहार, आयुर्वेदिक फार्मास्यूटिकल्स के बारे में पढ़ता ही है। पाँच-साढ़े पाँच साल पढ़ने के बाद उसे डिग्री मिलती है और फिर वो अपनी खुद की प्रैक्टिस या नौकरी या फिर और ऊँची पढ़ाई के लिए प्रयास करता है।

साथियों, क्या ये संभव है कि BAMS के कोर्स को इस तरह डिजाइन किया जाए कि हर परीक्षा पास करने के बाद छात्र को कोई ना कोई सर्टिफिकेट मिले। ऐसा होने पर दो फायदे होंगे। जो छात्र आगे की पढ़ाई के साथ-साथ अपनी प्रैक्टिस शुरू करना चाहेंगे, उन्हें सहूलियत होगी और जिन छात्रों की पढ़ाई किसी कारणवश बीच में ही छूट गई, उनके पास भी आयुर्वेद के किसी ना किसी स्तर का एक सर्टिफिकेट होगा। जो उसको, उसके जीवन में काम आएगा, इतना ही नहीं, जो छात्र पाँच साल का पूरा कोर्स करके निकलेंगे, उनके पास भी रोजगार के और बेहतर विकल्प होंगे।

अभी श्रीपाद नाइक जी ने स्पोर्लडिंग रीहैब हॉस्पिटल और हॉवर्ड मेडिकल स्कूल के साथ collaboration का जिक्र किया था। मुझे ये सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई है और मैं दोनों पक्षों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। मुझे उम्मीद है कि इस collaboration से स्पोर्ट्स मेडिसिन, रीहैबिलिटेशन मेडिसिन, दर्द के निवारण में आयुर्वेदिक उपचार की संभावनाओं को तलाशने में अवश्य मदद मिलेगी।

भाइयों और बहनों, मैंने अब से कुछ देर पहले ही आयुर्वेद से ट्रीटमेंट के लिए Standard Guidelines और Standard टर्मिनॉलॉजी पोर्टल लॉन्च किया है। इन दोनों ही पहलों से बड़ी मात्रा में data generate होगा जिसका इस्तेमाल आयुर्वेद को आधुनिक तौर-तरीके के अनुरूप वैज्ञानिक मान्यता दिलाने में इसका बहुत उपयोग हो सकता है। और मुझे लगता है कि ये पहल आयुष विज्ञान के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगी। इसकी मदद से आयुर्वेद की वैश्विक स्वीकार्यता भी बढ़ेगी।

आयुर्वेद में Standard Guidelines और Standard टर्मिनॉलॉजी का होना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि इसके ना होने की वजह से ऐलोपैथिक की दुनिया और उसकी प्रक्रियाएं आसानी से आयुर्वेद पर हावी हो जाती थीं। हमारे देश में भी अलग - अलग भागों में एक ही बीमारी को अलग-अलग शब्दों में वर्णित किया जाता है। उस पर जो उपचार होता है उपचार वही है, लेकिन वर्णन अलग है। और इस प्रकार दुनिया में भी हम एक सही तरीके से चीजों को पहुंचा नहीं पाते हैं। अगर हम

मिलकर के इस दिशा में ये जो Portal बनाया है, वो काफी उपयोगी हो सकता है। एक जमाने में भारत सरकार के एक कमीशन ने भी अपनी रिपोर्ट में साफ कहा था कि हमारे यहां आयुर्वेद लोगों के घरों से दूर है क्योंकि उसकी पद्धति आज के समय के अनुकूल नहीं है।

और इसलिये एक तरफ एलौपैथिक दवाइयां हैं, जिन्हें खट से खोला और खा लिया। वहीं दूसरी तरफ आयुर्वेद इसलिए मात खा जाता है क्योंकि दवाई बनाने की प्रक्रिया इतनी लंबी है कि सामान्य व्यक्ति सोचता है, कौन इतना समय खराब करेगा। Fast Food के इस दौर में आयुर्वेदिक दवाइयों की पुरानी स्टाइल की पैकेजिंग से काम नहीं चलेगा। जैसे-जैसे आयुर्वेदिक दवाइयों की पैकेजिंग आधुनिक होती जाएगी, इलाज की प्रक्रियाओं का स्टैंडर्ड तय होंगे, टर्मिनॉलॉजी कॉमन हो जाएगी, आप देखिएगा कितनी तेजी से फर्क आने लगेगा।

आज के युग में लोग तत्काल परिणाम चाहते हैं। तत्काल इफेक्ट मिलता है तो लोग साइड इफेक्ट की परवाह नहीं करते। ये सोच गलत है, लेकिन यही हर तरफ दिखता भी है। और इसलिए आयुर्वेद के जानकारों को चाहिए इफेक्ट यानि तत्काल परिणाम देने वाली और फिर भी साइड इफेक्ट्स से बचाने वाली दवाइयों पर शोध करना समय की मांग है, ऐसी औषधियों के बारे में हम सोचें और उनका निर्माण भी करें।

भाइयों और बहनों, मुझे बताया गया है कि आयुष मंत्रालय के तहत 600 से ज्यादा आयुर्वेदिक दवाइयों के फार्मसी स्टैंडर्ड को पब्लिश किया गया है। इसका जितना ज्यादा प्रचार-प्रसार होगा, उतना ही आयुर्वेदिक दवाइयों की पैठ भी बढ़ेगी।

हर्बल दवाइयों का आज विश्व में एक बड़ा मार्केट तैयार हो रहा है। भारत को इसमें भी अपनी पूर्ण क्षमताओं का इस्तेमाल करना होगा। हर्बल और मेडिसिनल प्लांट्स कमाई का बहुत बड़ा माध्यम बन रहे हैं।

आयुर्वेद में तो तमाम ऐसे पौधों से दवा बनती है जिन्हें ना ज्यादा पानी चाहिए होता है और ना ही उपजाऊ जमीन की जरूरत होती है। कई चिकित्सीय पौधे तो ऐसे ही उग आते हैं। लेकिन उन पौधों का असली महत्व ना पता होने की वजह से उन्हें झाड़-झंखाड़ समझकर उखाड़ दिया जाता है। जागरूकता की कमी की वजह से हो रहे इस नुकसान से कैसे बचा जाए, इस पर भी विचार किए जाने की आवश्यकता है।

मेडिसिनल प्लांट्स की खेती से रोजगार के नए अवसर भी खुल रहे हैं। मैं चाहूंगा कि आयुष मंत्रालय कौशल विकास मंत्रालय के साथ मिलकर इस दिशा में किसानों या छात्रों के लिए कोई short-term Course भी Develop कर सकते हैं क्या। क्या आयुर्वेदिक अभी Sea Weed के पौधों पर रीसर्च किया है। भारत का समुद्री तट एक बहुत बड़ी सम्पदा है। आयुर्वेदिक मेडिसिन के आधार के लिये काम आ सकती है क्या। और मैं मानता हूं, मैं इस विषय का ज्ञाता नहीं हूं। लेकिन हम इस प्रकार के नये क्षेत्रों में भी पदापर्ण करें रीसर्च करें, तो हम शायद उन मछुआरों की जिन्दगी में बदलाव ला सकते हैं। और हम वनस्पति आधारित दवाइयों को और अधिक समृद्ध दवाई बनाकर के जो Wellness में Interest रखते हैं। उस वर्ग की सेवा कर सकते हैं। पारंपरिक खेती के साथ-साथ किसान जब खेत के किनारे पर जो जमीन बड़ी खाली पड़ी रहती है, दीवार के जैसी बड़ी बाड़ लगा दी जाती है। अगर उसी का जमीन का इस्तेमाल करें, और अगर मेडिसिनल प्लांट्स के लिए करने लगेगा, तो उसकी भी आय बढ़ेगी। और 2022 में आजादी के 75 साल हो तब हम हिन्दुस्तान के किसान की आय दोगुना करना चाहते हैं। अगर उसके खेत के किनारे पर मेडिसिनल प्लांट के लिये आयुष मंत्रालय, एग्रीकल्चरल मंत्रालय मिलकर के हमारे किसानों को गाइड करे, उनको मदद करे तो ये भी एक नई आय का साधन हमारे किसान भाइयों - बहनों को हो सकता है।

साथियों इस सेक्टर को विकास और विस्तार के लिए अभी काफी निवेश की आवश्यकता है। सरकार ने Health Care System में सौ प्रतिशत Foreign Direct Investment- FDI को स्वीकृति दी है। Health Care में FDI का फायदा आयुर्वेद और योग को कैसे मिले, इस बारे में भी प्रयास किए जाने चाहिए।

मैं देश की तमाम कंपनियों और प्राइवेट सेक्टर से भी आग्रह करूंगा कि जिस तरह वो एलौपैथिक Based बड़े-बड़े अस्पतालों के लिए आगे आते हैं, वैसे ही योग और आयुर्वेद के लिए भी आगे आना चाहिए। अपने Corporate Social Responsibility यानि CSR फंड का कुछ हिस्सा आयुर्वेद और योग पर भी वो जरा लगाएं।

हमें ये भी ध्यान रखना होगा कि हजारों वर्ष पूर्व हमारे पूर्वजों ने जो ज्ञान प्राप्त किया था, उसके पीछे अथक परिश्रम था, मानव-जाति के कल्याण की प्रेरणा थी। कुछ नया experiment करने, कुछ innovative करने की सोच ने ही योग और आयुर्वेद जैसे चमत्कारों को जन्म दिया। लेकिन जैसे ही हम innovation से पीछे हटे, स्थितियां बदलने लगीं, हमारा प्रभाव कम होने लगा।

इस स्थिति को अब पूरी तरह वापस बदलने की आवश्यकता है। आज समय की ही नहीं, पूरी मानवीयता की मांग है कि भारत अपनी स्थिति को बदले। साथियों, आज दुनिया Holistic Health Care का रास्ता खोज रही है, लेकिन उसे रास्ता नहीं मिल रहा है। वो बहुत उम्मीद से भारत और भारत के आयुर्वेद की तरफ भारत की योगिक शक्ति की ओर बड़ी आशा भरी नज़र से देख रही है। उसे भी भरोसा हो रहा है कि योग और आयुर्वेद में भारत का अनुभव पूरे विश्व के कल्याण के काम में आ सकता है। और इसलिए हमारे लिए भी ये महत्वपूर्ण समय है कि अब एक पल भी ना गंवाया जाए। संकल्प लेकर आगे बढ़ा जाए, उसे सिद्ध किया जाए।

साथियों, भारत की 'एकम शत विप्रा बहुधा वदन्ति' की सोच सभी तरह की औषध-प्रणालियों या हेल्थ सिस्टम पर भी लागू है। हम हर तरह के हेल्थ सिस्टम का सम्मान करते हैं और सभी की प्रगति हो ये कामना करते हैं। भारत में आध्यात्मिक जनतंत्र की तरह की उपचार प्रणालियों का भी जनतंत्र है। सभी को अपनी प्रगति का अधिकार है, सभी का सम्मान है। सभी तरह के हेल्थ सिस्टम को आगे बढ़ाने के पीछे सरकार का ध्येय है कि गरीबों को सस्ते से सस्ता इलाज, सहजता से उपचार उपलब्ध हो।

इस वजह से हेल्थ सेक्टर में हमारा जोर दो प्रमुख चीजों पर लगातार रहा है - पहला Preventive Health Care और दूसरा ये कि हेल्थ सेक्टर में affordability और access बढ़े।

Preventive Health Care पर जोर देते हुए हमने मिशन इन्द्रधनुष की शुरुआत की थी ताकि 2020 तक उन सभी बच्चों का टीकाकरण किया जा सके जो सामान्य टीकाकरण अभियान में छूट जाते हैं। सरकार ने तय किया कि ऐसे बच्चों का पूर्ण रूप से टीकाकरण करके उन्हें 12 तरह की बीमारियों से बचाया जाए। मिशन इन्द्रधनुष के तहत अब तक ढाई करोड़ से ज्यादा बच्चों और लगभग 70 लाख गर्भवती महिलाओं को टीका लगाया जा चुका है।

ये सरकार के प्रयास का ही असर है कि देश में टीकाकरण की जो रफ्तार सालाना एक प्रतिशत की दर से बढ़ रही थी, हमने पिछले तीन साल से ये अभियान चलाया और आज ये करीब-करीब साढ़े 6 प्रतिशत पहुंच गया। कहां एक प्रतिशत वृद्धि और कहां साढ़े 6 प्रतिशत वृद्धि। वही मशीनरी अगर लक्ष्य तय करके जोर लगा दे तो परिणाम मिलते हैं और ये परिणाम नजर आ रहा है। अभी इसी महीने सरकार ने इस मिशन को और केंद्रित कर दिया है। Intensified Mission Indradhanush की शुरुआत की गई है जिसके तहत उन जिलों-शहरों-कस्बों पर Focus किया जाएगा यहां टीकाकरण की कवरेज पीछे रह गयी है, कम है। अगले एक साल तक देश के 173 जिलों में हर महीने हफ्ते में 7 दिन लगातार टीकाकरण अभियान चला जाएगा। सरकार का लक्ष्य है कि दिसंबर 2018 तक देश में full इम्युनायजेशन कवरेज को प्राप्त कर लिया जाए।

साथियों, पहले ये समझा जाता था कि हेल्थ केयर की जिम्मेदारी सिर्फ Health Ministry की है। लेकिन हमारी सोच अलग है। Intensified Mission Indradhanush में अब सरकार के 12 अलग-अलग मंत्रालयों को, यहां तक की रक्षा मंत्रालय को भी हमने इस अभियान के साथ जोड़ा है।

भाइयों और बहनों, Preventive HealthCare एक और सस्ता और स्वस्थ तरीका है और वो है स्वच्छता। स्वच्छता को इस सरकार ने जनआंदोलन की तरह घर-घर जन जन-जन तक पहुंचाया है। सरकार ने तीन वर्षों में 5 करोड़ से ज्यादा शौचालयों का निर्माण करवाया है। स्वच्छता को लेकर लोगों की सोच किस तरह बदली है, इसका उदाहरण है कि अब शौचालयों को कुछ लोगों ने इज्जतघर कहना शुरू कर दिया। अभी आपने कुछ दिनों पहले आई Unicef की रिपोर्ट आई है। शायद आपने पढ़ा होगा। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि जो परिवार गांव में रहता है और वो एक शौचालय बनवाता है, तो Unicef का कहना है एक परिवार शौचालय बनाता है तो उसके घर में सालाना बीमारी के पीछे जो 50 हजार तक खर्च

होता है, वो खर्च बच जाता है। आप विचार कीजिये एक गरीब की जिन्दगी में टॉयलेट बनने से अगर 50 हजार रुपए बच जाता है, तो उस गरीब की कितनी सेवा होगी।

Preventive HealthCare को बढ़ावा देने के साथ ही सरकार स्वास्थ्य सेवा में affordability और access बढ़ाने के लिए शुरू से ही holistic approach लेकर चल रही है। मेडिकल कॉलेजों में डॉक्टरी की पढ़ाई करने वाले छात्रों के लिए पीजी मेडिकल सीट में वृद्धि की गई है। इसका सीधा लाभ हमारे युवाओं को तो मिलेगा ही साथ ही गरीबों को इलाज के लिए भी डॉक्टर भी आसानी से उपलब्ध होंगे। देशभर के लोगों को बेहतर इलाज और स्वास्थ्य उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न राज्यों में नए-नए एम्स भी खोले जा रहे हैं। स्टेंट के दामों में भी भारी कटौती, हमें मालूम है हृदय के अन्दर स्टेंट डलवाना है तो कहीं जाओ तो बोले 50 हजार, कोई कहे एक लाख कोई कहे दो लाख, कोई कहे ढाई लाख। एक मध्यम वर्ग का परिवार अगर उसको हृदय की बीमारी हो गई, और उसको अगर जाना पड़ा इतने रुपये पूरा मकान गिरवी रख दे तो भी नहीं निकाल पाता। सरकार ने उनसे बातें की, उनको बुलाया, भई इतना महंगा क्यों है, बातें करते - करते जो पहले कीमत थी करीब - करीब तीस चालीस प्रतिशत कम कर दी। कुछ चीजें तो तीस प्रतिशत में बिकना शुरू हो गया। आज ज्यादातर बड़ी आयु के लोग सीनियर सिटिजन Knee Operation करवाते हैं, Knee Implants की कीमतों को भी हमने उसमें भी कटौती की। जन औषधि केन्द्रों के माध्यम से भी गरीबों को सस्ती दवाएं उपलब्ध हों और इसके लिये भी जन औषधि केन्द्र अस्पतालों में खोले गए। वही उत्तम से उत्तम दवाएं, जो कभी 12 रुपये में मिलती थी, वो डेढ़ रुपये में मिल जाए ये प्रबंध करने का काम सरकार ने किया है।

साथियों, मुझे बताया गया है कि इस वर्ष लगभग 24 देशों में हमारे विदेश स्थित मिशन भी आयुर्वेद दिवस मना रहे हैं। पिछले 30 वर्षों से दुनिया में आईटी क्रांति देखी गई है। अब आयुर्वेद की अगुवाई में स्वास्थ्य क्रांति होनी चाहिए। आइए हम इस शुभ दिन पर शपथ लें 'हम आयुर्वेद का अभ्यास करेंगे, हम आयुर्वेद को जीवित रखेंगे और हम आयुर्वेद के लिए जीएंगे "

साथियों आप सभी को आयुर्वेद दिवस पर अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान की बहुत-बहुत शुभकामनाओं के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं और फिर मैं एक बार आप सबको बहुत बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

बहुत-बहुत धन्यवाद !!!

अतुल तिवारी/ हिमांशु सिंह/ शौकत अली

